I J C R M
International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

पर्यावरण संरक्षण,वर्तमान परिप्रेक्ष्य में चुनौतियाँ एवं समाधान

किशोर मालवीय
शोधार्थी, इतिहास विभाग, पीएम कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस, शासकीय माधव कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय उज्जैन, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author: * किशोर मालवीय

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.20809054

सारांश

पर्यावरण संरक्षण वर्तमान समय की सबसे महत्वपूर्ण वैश्विक आवश्यकता बन गया है। आधुनिक युग में विज्ञान एवं तकनीकी विकास ने मानव जीवन को अत्यधिक सुविधाजनक बनाया है, किंतु इसके परिणामस्वरूप प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन हुआ है। औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, जनसंख्या वृद्धि तथा प्राकृतिक संसाधनों के अनियंत्रित उपयोग ने पर्यावरणीय संतुलन को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। वायु, जल, भूमि तथा ध्वनि प्रदूषण जैसी समस्याएँ मानव स्वास्थ्य एवं जैव विविधता के लिए गंभीर संकट उत्पन्न कर रही हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में पर्यावरण की अवधारणा, प्रदूषण के विभिन्न प्रकार, पर्यावरणीय संकट के कारण तथा संरक्षण के उपायों का विस्तृत अध्ययन किया गया है। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारी दायित्व नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक की नैतिक जिम्मेदारी भी है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 05-05-2026
- **Accepted:** 18-06-2026
- **Published:** 23-06-2026
- **IJCRM:**5(3); 2026: 1056-1058
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

किशोर मालवीय. पर्यावरण संरक्षण,वर्तमान परिप्रेक्ष्य में चुनौतियाँ एवं समाधान. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(3):1056-1058.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: पर्यावरण, पर्यावरण संरक्षण, प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, प्राकृतिक संसाधन, जल संरक्षण, नवीकरणीय ऊर्जा।

© 2026 किशोर मालवीय. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

पर्यावरण मानव जीवन का मूल आधार है। पृथ्वी पर उपस्थित समस्त जीव-जंतु, वनस्पतियाँ, जल, वायु, मिट्टी एवं अन्य प्राकृतिक तत्व मिलकर पर्यावरण का निर्माण करते हैं। 'पर्यावरण' शब्द 'परि' और 'आवरण' से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है— चारों ओर से घेरने वाला वातावरण। मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ प्रकृति का दोहन भी निरंतर बढ़ता गया। प्रारंभिक काल में मनुष्य प्रकृति पर निर्भर था, किंतु आधुनिक विज्ञान और तकनीक के विकास ने उसे प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक उपयोग की ओर प्रेरित किया। परिणामस्वरूप आज पृथ्वी पर पर्यावरणीय असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो गई है।[2]

वर्तमान समय में ग्लोबल वार्मिंग, ओजोन परत का क्षरण, जल संकट, जैव विविधता का विनाश तथा जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याएँ विश्व स्तर पर चिंता का विषय बन चुकी हैं। बढ़ते उद्योगों एवं वाहनों से निकलने वाला धुआँ वायु को प्रदूषित कर रहा है। नदियों एवं जल स्रोतों में रासायनिक अपशिष्ट छोड़े जाने से जल प्रदूषण बढ़ रहा है। प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग भूमि की उर्वरता को नष्ट कर रहा है। इन सभी समस्याओं ने मानव जीवन के अस्तित्व को चुनौती दी है। यदि समय रहते पर्यावरण संरक्षण की दिशा में प्रभावी कदम नहीं उठाए गए, तो भविष्य में गंभीर संकट उत्पन्न हो सकता है।[3]

भारतीय संस्कृति में प्रकृति को सदैव पूजनीय माना गया है। वेदों एवं उपनिषदों में वृक्षों, नदियों और पर्वतों की महत्ता का उल्लेख मिलता है। भारतीय परंपरा में पीपल, बरगद एवं तुलसी जैसे वृक्षों को धार्मिक महत्व प्रदान किया गया, जिससे उनका संरक्षण सुनिश्चित हो सके। आधुनिक समय में पर्यावरण संरक्षण का महत्व और अधिक बढ़ गया है क्योंकि विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन बनाए रखना अत्यंत आवश्यक हो गया है।[4]

• पर्यावरण की अवधारणा

पर्यावरण वह समग्र परिवेश है जिसमें जीवधारी निवास करते हैं तथा अपनी जीवन क्रियाएँ संपन्न करते हैं। इसमें जैविक एवं अजैविक दोनों प्रकार के तत्व सम्मिलित होते हैं। जैविक तत्वों में मनुष्य, पशु-पक्षी, वनस्पतियाँ एवं सूक्ष्म जीव शामिल हैं, जबकि अजैविक तत्वों में जल, वायु, मिट्टी, तापमान, खनिज तथा ऊर्जा स्रोत सम्मिलित हैं। पर्यावरण केवल प्राकृतिक तत्वों तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियाँ भी इसके अंतर्गत आती हैं।[5]

मानव और पर्यावरण का संबंध अत्यंत घनिष्ठ है। मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रकृति पर निर्भर रहता है। भोजन, जल, वायु एवं आवास जैसी मूलभूत आवश्यकताएँ पर्यावरण से ही प्राप्त होती हैं। इसलिए पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखना मानव जीवन के लिए अनिवार्य है। जब पर्यावरण में उपस्थित तत्वों का संतुलन बिगड़ता है, तब प्रदूषण एवं प्राकृतिक आपदाओं जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।[6]

• प्रदूषण के प्रकार

पर्यावरण प्रदूषण वर्तमान युग की सबसे गंभीर समस्याओं में से एक है। प्रदूषण का अर्थ है— पर्यावरण में अवांछित एवं हानिकारक तत्वों की वृद्धि, जिससे प्राकृतिक संतुलन प्रभावित होता है। वायु प्रदूषण उद्योगों एवं वाहनों से निकलने वाली विषैली गैसों के कारण उत्पन्न होता है। कार्बन डाइऑक्साइड, सल्फर डाइऑक्साइड एवं नाइट्रोजन ऑक्साइड जैसी गैसें वातावरण को प्रदूषित करती हैं। इससे दमा, फेफड़ों के रोग एवं हृदय संबंधी बीमारियाँ बढ़ती हैं।[7]

जल प्रदूषण भी मानव स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बन चुका है। औद्योगिक अपशिष्ट, रासायनिक पदार्थ एवं घरेलू गंदगी नदियों एवं तालाबों में मिलकर जल को प्रदूषित कर देते हैं। प्रदूषित जल के सेवन से हैजा, टाइफाइड एवं पीलिया जैसी बीमारियाँ फैलती हैं। इसके अतिरिक्त ध्वनि प्रदूषण भी मानसिक तनाव एवं अनिद्रा जैसी समस्याओं को बढ़ाता है। बड़े शहरों में यातायात एवं मशीनों के शोर के कारण ध्वनि प्रदूषण तेजी से बढ़ रहा है।[8]

भूमि प्रदूषण भी एक गंभीर समस्या है। रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी की उर्वरता कम हो रही है। प्लास्टिक एवं अन्य अविघटनीय पदार्थ भूमि को प्रदूषित कर रहे हैं। इससे कृषि उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। इसके अतिरिक्त रेडियोधर्मी प्रदूषण परमाणु परीक्षणों एवं रेडियोधर्मी पदार्थों के रिसाव के कारण उत्पन्न होता है, जो मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक है।[9]

• पर्यावरणीय संकट के कारण

पर्यावरणीय संकट के पीछे अनेक कारण उत्तरदायी हैं। बढ़ती जनसंख्या के कारण प्राकृतिक संसाधनों पर अत्यधिक दबाव पड़ा है। अधिक जनसंख्या के लिए आवास, भोजन एवं ऊर्जा की आवश्यकता बढ़ने से वनों की कटाई तेजी से हुई है। जंगलों के विनाश से जैव विविधता प्रभावित हो रही है तथा जलवायु परिवर्तन की समस्या बढ़ रही है।[10]

औद्योगिकीकरण एवं शहरीकरण भी पर्यावरण प्रदूषण के प्रमुख कारण हैं। उद्योगों से निकलने वाला धुआँ एवं रासायनिक अपशिष्ट पर्यावरण को प्रदूषित कर रहे हैं। शहरी क्षेत्रों में बढ़ते वाहनों से वायु प्रदूषण तेजी से बढ़ा है। इसके अतिरिक्त प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग भी पर्यावरणीय संकट को बढ़ा रहा है। प्लास्टिक अविघटनीय होने के कारण मिट्टी एवं जल दोनों को प्रदूषित करता है।[11]

प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित दोहन भी पर्यावरणीय असंतुलन का प्रमुख कारण है। जल, खनिज एवं वन संपदा का अत्यधिक उपयोग भविष्य के लिए गंभीर संकट उत्पन्न कर रहा है। यदि प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण नहीं किया गया, तो आने वाली पीढ़ियों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।[12]

• पर्यावरण संरक्षण के उपाय

पर्यावरण संरक्षण के लिए सबसे महत्वपूर्ण उपाय वृक्षारोपण है। वृक्ष वायु को शुद्ध करने, वर्षा को संतुलित रखने तथा मिट्टी के कटाव को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसलिए अधिक से अधिक वृक्ष लगाना एवं वनों की कटाई पर नियंत्रण आवश्यक है।[13]

जल संरक्षण भी पर्यावरण संरक्षण का महत्वपूर्ण उपाय है। वर्षा जल संचयन, जल का सीमित उपयोग तथा जल स्रोतों की स्वच्छता बनाए रखना आवश्यक है। जल संकट को रोकने के लिए लोगों में जागरूकता उत्पन्न करना आवश्यक है।[14]

नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों जैसे सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा एवं जैव ऊर्जा का उपयोग बढ़ाना चाहिए। इससे जीवाश्म ईंधनों पर निर्भरता कम

© 2026 किशोर मालवीय. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

होगी तथा प्रदूषण में कमी आएगी। प्लास्टिक के उपयोग को सीमित करना तथा पुनर्चक्रण को बढ़ावा देना भी आवश्यक है।[15]

पर्यावरण संरक्षण में शिक्षा एवं जन-जागरूकता की महत्वपूर्ण भूमिका है। विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में पर्यावरण शिक्षा को अनिवार्य बनाया जाना चाहिए। सरकार द्वारा पर्यावरण संरक्षण संबंधी कठोर कानूनों का पालन सुनिश्चित किया जाना चाहिए। "स्वच्छ भारत अभियान", "नमामि गंगे परियोजना" एवं "वन महोत्सव" जैसे कार्यक्रम पर्यावरण संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं।[16]

निष्कर्ष

पर्यावरण संरक्षण वर्तमान समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। मानव जीवन का अस्तित्व पूर्णतः पर्यावरण पर निर्भर करता है। यदि प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन एवं प्रदूषण इसी प्रकार बढ़ता रहा, तो भविष्य में पृथ्वी पर जीवन संकट में पड़ सकता है। पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान केवल सरकारी योजनाओं से संभव नहीं है, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी। वृक्षारोपण, जल संरक्षण, प्रदूषण नियंत्रण एवं सतत विकास की नीतियों को अपनाकर ही पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखा जा सकता है। आने वाली पीढ़ियों को सुरक्षित एवं स्वच्छ पर्यावरण प्रदान करना हमारा नैतिक कर्तव्य है।

संदर्भ सूची

1. शर्मा आरके। पर्यावरण अध्ययन। भोपाल: हिंदी ग्रंथ अकादमी; 2020. पृ. 12।
2. सिंह एसपी। पर्यावरण एवं प्रदूषण। जयपुर: रावत पब्लिकेशन; 2019. पृ. 25।
3. इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (IPCC)। Climate Change 2021: The Physical Science Basis। जिनेवा: IPCC; 2021. पृ. 41।
4. चौहान बीएल। पर्यावरणीय समस्याएँ और समाधान। आगरा: साहित्य भवन; 2018. पृ. 39।
5. यादव केसी। पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास। वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन; 2021. पृ. 18।
6. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी)। पर्यावरण शिक्षा। नई दिल्ली: एनसीईआरटी; 2021. पृ. 44।
7. सिंह एसपी। पर्यावरण एवं प्रदूषण। जयपुर: रावत पब्लिकेशन; 2019. पृ. 52।
8. शर्मा आरके। पर्यावरण अध्ययन। भोपाल: हिंदी ग्रंथ अकादमी; 2020. पृ. 67।
9. चौहान बीएल। पर्यावरणीय समस्याएँ और समाधान। आगरा: साहित्य भवन; 2018. पृ. 73।
10. यादव केसी। पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास। वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन; 2021. पृ. 81।
11. भारत सरकार। पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय। वार्षिक रिपोर्ट 2022। नई दिल्ली: भारत सरकार; 2022. पृ. 95।
12. यूनेस्को। पर्यावरणीय सतत विकास पर रिपोर्ट। पेरिस: यूनेस्को; 2020. पृ. 58।
13. शर्मा आरके। पर्यावरण अध्ययन। भोपाल: हिंदी ग्रंथ अकादमी; 2020. पृ. 102।
14. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी)। पर्यावरण शिक्षा। नई दिल्ली: एनसीईआरटी; 2021. पृ. 88।
15. यादव केसी। पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास। वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन; 2021. पृ. 111।
16. भारत सरकार। पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय। वार्षिक रिपोर्ट 2022। नई दिल्ली: भारत सरकार; 2022. पृ. 120।

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

किशोर मालवीय पीएम कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस, शासकीय माधव कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, उज्जैन, मध्य प्रदेश, भारत से संबद्ध हैं। वे शिक्षण, अध्ययन एवं शोध कार्यों में सक्रिय रूप से संलग्न हैं। उनकी रुचि उच्च शिक्षा, अकादमिक अनुसंधान तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में है, और वे शैक्षणिक उत्कृष्टता को बढ़ावा देने हेतु निरंतर प्रयासरत हैं।

© 2026 किशोर मालवीय. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/